IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण अधिवास

राम सिंह
सहायक आचार्य
विद्याश्रम कॉलेज,
शिकारगढ़ रोड़, उचियारड़ा, जोधपुर।

शोध सारांश: ग्रामीण अधिवास से तात्पर्य उस अधिवास से होता है जिसके अधिकांश निवासी अपने जीवन यापन के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भूमि के विदोहन पर निर्भर रहते हैं अर्थात इनके निवासियों के मुख्य व्यवसाय कृषि करना, पशुपालन, कुटीर उद्यम, मछलियां पकड़ना, लकड़िया काटना, वन वस्तु संग्रह आदि होता है। इनका जीवन एक प्रकार से ग्रामीण स्वरूप लिये होता है किन्तु इनको आवश्यकता की पूर्ति के लिए इन बस्तियों में वे लोग भी रहते हैं जो कृषकों और कृषक श्रमिकों को अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ग्रामीण अधिवास में सामन्यतः एकांकीय अधिवास, कृषक घर, पूरवा और गांव आदि आते है। गांव की जनसंख्या कुछ ही घरों से लेकर 5000 अथवा कभी कभी इससे भी अधिक होती है। पूरवे गांव से छोटे होते है और गांव की अपेक्षा कम सघन होते हैं। इनमें मकान तो होते हैं किन्तु ये प्रायः बिखरे होते है। ग्रामीण अधिवास धरातल के प्रत्येक स्थान पर नहीं पाये जाते है बल्कि अनुकूल भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक तथा ऐतिहासिक कारकों की उपलब्धता होने पर हो उनका विकास किसी स्थान पर होता है।

संकेताक्षर : स्थायी अधिवास, अस्थयी अधिवास, जलापूर्ति, उपजाऊ भूमि, शुष्क भूमि, जलापूर्ति, भवन निर्माण सामग्री अनुकूल जलवायु, रक्षा एंव प्रतिरक्षा, सूर्य प्रकाश, वनस्पति सघनता, प्रकीर्ण बस्तियां,, सघन बस्तियां, संयुक्त बस्तियां, अपखण्डित बस्तियां।

प्रस्तावनाः– ग्रामीण अधिवास विश्व का मुख्य आधार है क्योंकि यही वे क्षेत्र है जो कृषि से संबंधित है। ग्रामीण अधिवासों को हम उन क्षेत्रों के रूप में जानते है जहां फसल कटी हुई पड़ी है, जहां सघन जनसंख्या नहीं है, छोटे छोटे बसे हुए क्षेत्र और जहां पर बहुत सारे लोग कृषि कार्य या प्राथमिक व्यवसायों में लगे है इसलिये वे अधिवास जो नगरों के रूप में वर्गीकृत नहीं है उन्हें ग्रामीण अधिवास कहते है।

अधिवास मानव निवास के मुल आधार है। मानव समूह जहां स्थायी एवं अस्थायी रूप से घर बनाकर रहते है उन समूहों को मानव अधिवास कहते हैं। यह मुख्यतः दो प्रकार के होते हैः–

1. स्थायी अधिवास
2. अस्थायी अधिवास

1. **स्थायी अधिवासः–** यह अधिवास उन क्षेत्रों में मिलते है जहां पर भूमि समतल होने के साथ साथ उपजाऊ हो, जल प्राप्ति की सुविधा हो, मानव जीवन सुरक्षित हो, पशुपालन के लिये उचित दशाऐं हो, कृषि के लिए सिंचाई जल एवं उपयुक्त उपजाऊ मिट्टी हो, मानव के आकर्षण के लिए कोई तथ्य अथवा आर्थिक संसाधन वहां

मिलता हो, वहां आवागमन के लिए तथा संपर्क स्थापित करने के लिए सड़क एवं रेलमार्गों की सुविधा हो। यह भौगोलिक दशाऐं सामान्यतः भूमध्य सागरीय मानसूनी एवं शीतोष्ण प्रदेशों में ही अधिकांश बस्तियां स्थायी रूप लिये होती है। यहां पर जनसंख्या का बसाव सघन होता है।

2. **अस्थायी अधिवासः–** यह अधिवास उन क्षेत्रों में होते है जहां पर जल की कमी भूमि का समतल न होना, शिकारी, चरवाहे, प्राचीन पद्धति से कृषि करने वाले कृषक, जहां पशुपालन ऋतुओं के अनुसार परिवर्तित हो, घाटियों में स्थानान्तरण होता रहता हो, स्थानान्तरित कृषि वाले क्षेत्र आदि में मुख्य रूप से अस्थायी अधिवास पाये जाते है एवं जनसंख्या का बसाव भी विरल ही होता है।

ग्रामीण अधिवास की उत्पति को प्रभावित करने वाले कारकः–

स्थिति व अवस्थिति के आधार पर ग्रामीण अधिवासों की उत्पति को प्रभावित करने वाले निम्न कारक हैः–

1. जलापूर्ति
2. उपजाऊ भूमि
3. शुष्क भूमि
4. भवन निर्माण सामग्री
5. अनुकूल जलवायु
6. रक्षा एवं प्रतिरक्षा
7. सूर्य प्रकाश
8. वनस्पति सघनता

1. **जलापूर्तिः–** ग्रामीण अधिवासों की उत्पति को प्रभावित करने वाले कारकों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक जल की उपलब्धता है। जीवन की मूल आवश्यकता जल है। इसको बहुत से कार्य में प्रयोग किया जाता है जिनमें से घरेलु और कृषि कार्य के लिये अत्याधिक आवश्यक होता है। जलाशयों का उपयोग भारत तथा विश्व में परिवहन के लिए भी किया जाता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े बड़े बांधों का निर्माण करके बहुउद्देशीय परियोजना बनाने से लोगों को रोजगार भी प्रदान किया जाता है। प्रारम्भिक सभ्यता के समय अधिवास नदी, झील, तालाब इत्यादि के किनारों पर ही स्थापित होते थे।

2. **उपजाऊ भूमिः–** उपजाऊ भूमि अधिवासों के लिए महत्वपूर्ण कारक है। ग्रामीण जनसंख्या का मुख्य आधार कृषि है इसलिये उपजाऊ भूमि इस प्रकार के आवासों का मुख्य आधार है। उपजाऊ भूमि से कृषि की पैदावार में वृद्धि होती है तथा पशुपालन के लिए उत्तम गुणवता का खाद्यान एवं चारा मिल जाता है। प्राचीन सभ्यता जैसे हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो का विकास भी नदियों के उपजाऊ मैदान में एवं घाटियों में हुआ था।

3. **शुष्क भूमिः–** अधिवासों का निर्माण दलदलीय और बाढ़ प्रवण क्षेत्रों में उच्च भूभागों पर अधिकांश किया जाता है। रूका हुआ पानी परिवहन करने एवं आने जाने में बाधा उत्पन्न करता है और बीमारियों को जन्म देता हैं इस तरह के क्षेत्रों में शुष्क बिन्दु अधिवास जैसी विशेषताएं पायी जाती है। दलदली भूमि पर आवासों का निर्माण एवं कृषि नहीं की जा सकती इसलिये अधिकांश अधिवासों का निर्माण शुष्क भागों में किया जाता है।

4. **भवन निर्माण सामग्रीः–** ग्रामीण अधिवासों मे घरों के निर्माण के लिए सामग्री कृषि के अवशिष्ट जंगलों तथा तालाबो से मिल जाती है। ग्रामीण अधिवासों के लिए कच्ची भवन निर्माण सामग्री निम्न हैः– बांस, घास, लकड़ी, खस की घास, मिट्टी, गोबर, कच्ची ईंटें, खींप, पेड़ों के पत्तें, मूरड, मिट्टी के बने केलु, सौंफ की डंटल, कड़बी

इत्यादि। इसलिये ग्रामीण अधिवास के लिए निर्माण कार्य सरल, सुगम तथा कम रुपये में उपलब्ध सामग्री की महत्वर्पूण भूमिका होती है।

5. **अनुकूल जलवायुः–** इसका कार्य कम और स्थिर जलवायु से है जो न बहुत गर्म होती है और न ही अत्यधिक ठण्डी। लोग अधिकांशतः ऐसे स्थानों पर बसना चाहते है जहां पर तापमान, वर्षा, मिट्टी तथा वनस्पति सघन रूप से एवं अनुकूल भौगोलिक दशाऐं हो। अत्यधिक नमी वाले स्थान अस्वास्थ्यकर होने के कारण लोगों का अधिवास वहां पर कम होता है।

6. **रक्षा एवं प्रतिरक्षाः–** प्राचीन काल में यह कारक बहुत महत्वपूर्ण था उन दिनों राजनैतिक अस्थिरता और पड़ौसी विरोधियों के कारण अधिवास पहाड़ी भागों में उंचे स्थानों पर बनाये जाते थे। उदाहरण के लिए भारत में किले और कई महल पहाड़ियों की चोटियों या जलाशयों से घिरे हुए होते थे। नाइजीरिया में इन्सेलबर्ग सुरक्षा की दृष्टि से सबसे अच्छे समझे जाते थे।

7. **सूर्य प्रकाशः–** सूर्य के प्रकाश की उपलब्धता भी बस्तियों के विकास को प्रभावित करती है। लोग मेगाच्छादन तथा अल्प सूर्य प्रकाश प्राप्ति स्थल वाले क्षेत्रों में बसना कम ही पसन्द करते हैं। यही कारण है कि उतरी गोलार्द्ध में पर्वतों के उतरमुखी ढ़ाल पर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में पर्वतों के दक्षिणमुखी ढ़ालो पर सूर्य प्रकाश की प्राप्ति के कारण बस्ती अधिक स्थापित होती है।

8. **वनस्पति सघनताः–** धरातल पर वनस्पतियों की अधिक सघनता बस्तियों के बसाव के प्रतिकूल होती है। यही कारण है कि अफ्रीका एवं एशिया के सघन उष्ण कटीबंधीय क्षेत्र/भूमध्य रेखीय वन क्षेत्रों में बस्तियां कम ही स्थापित हुई है।

स्थायी अधिवास के अनेके रूप देखने को मिलते है। बिखरे हुए घर, कृषक घर, पूरवा, गांव, ढ़ाणी, कस्बा और नगर। दूसरे शब्दों मे इनमें से कुछ को ग्रामीण अधिवास एवं अन्य को नगरीय अधिवास कहते हैं।

सभ्यता के विकास के साथ साथ इनके प्रतिरूप एवं प्रारूप में निरंतर परिवर्तन व विकास या हास होता रहता है। इतना निश्चित है कि विकसित सभ्यता नगरों से आकर्षित होकर उन पर ही पूर्ण रूपेण आसरित हो जाती है एवं परंपरागत समाज का विकास ग्राम्यांचल में ही विकसित हो जाता हैं। ग्रामीण अधिवास में सामान्यतः एकांकी अधिवास, कृषक घर, पूरवा और गांव आते है।

ग्रामीण अधिवासों के प्रकार या वर्गीकरणः– मानव अधिवास का सामान्य वर्गीकरण उनकी स्थिति, प्रकार, स्परूप, प्रतिरूप, भौतिक वातावरण, आर्थिक एवं सामाजिक और सांस्कृतिक तकनीकी तथ्यों के आधार पर दो भागों मे किया जाता है।

1. सामूहिक या सघन ग्रामीण बस्तियां /अधिवास
2. प्रविकीर्ण या बिखरी हुई ग्रामीण बस्तियां/अधिवास

1. **सामूहिक या सघन ग्रामीण बस्तियां/अधिवासः–** यह अधिवास सामान्यतः उन क्षेत्रों मे मिलते है जहां मनुष्य सामाजिक दृष्टि से अपने पूरे समाज, परिवार के साथ मिलकर रहना पसंद करता है। विश्व की सर्वाधिक सघन बस्तियां नदियों के उपजाऊ मैदानों में मिलती है। जहां समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टियां, पर्याप्त जलप्राप्ति, कृषि से स्थायी भरण पोषण, पशुपालन, यातायात के पर्याप्त साधन, शांति, वन आदि कारक सघन बस्तियों के बसने के लिए उतरदायी होते है। चीन के हावांगों, भारत के गंगा यमुना दौआब, मिश्र की नील घाटी, यूरोप की राईन, रूर, पों घाटी, वोल्गा, मिसिसिपी मिसोरी घाटी की बस्तियां सघन बस्तियों के उदाहरण है।

2. **प्रविकीर्ण ग्रामीण अधिवास/बस्तियांः–** यह अधिवास एक दूसरे से दूर दूर बसे होते है। जिनका पारस्परिक संबंध कच्ची सड़कों, पगडंडियों, पहाड़ी भाग, दलदली क्षेत्रों, वन क्षेत्रों, कृषि के लिए अनुपयुक्त भागों में, अनुपजाऊ मिट्टी, कठोर जलवायु तथा अप्रतिकूल धरातल के कारण बड़े पैमाने पर खेती की संभावनाएं कम होती है। लोगों के जीवकोपार्जन साधनों के अभाव में लोगों का बसाव विरल होता है। इस प्रकार के अधिवास पर्वतीय भागों, मरूस्थलीय भागों तथा सघन वन क्षेत्रों में मिलते है।

दूरी के आधार पर अधिवास/बस्तियों के प्रकारः– मानव अधिवासों को मकानों की पारस्परिक दूरी के आधार पर निम्न चार भागों मे विभक्त किया गया हैः–

1. प्रकीर्ण या एकांकी बस्तियां/अधिवास
2. सघन या एकत्रित बस्तियां/अधिवास
3. संयुक्त बस्तियां/अधिवास
4. अपखण्डित बस्तियां/अधिवास

1. **प्रकीर्ण या एकांकी बस्तियां/अधिवासः–** ये वे बस्तियां है जिनमें बस्ती के घर प्रायः अलग अलग होते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ये बस्तियां उतनी ही प्राचीन है जितनी कि मानव सभ्यता। जिस समय मनुष्य को सामाजिक संगठन का ज्ञान नहीं था उस समय उसका जीवन प्रायः व्यक्तिगत एवं पृथक था। अतः उनके निवास भी एकांत में हुआ करते थे। आज भी इस प्रकार की बस्तियां चरवाहे, लकड़हारे एवं शिकारियों से संबंधित अर्थव्यवस्था वाले क्षेत्रों में मिलती है। यही नहीं विश्व में सर्वाधिक विकसित राष्ट्रों संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा आदि के क्षेत्रों में ऐसी बस्तियां सर्वत्र फैली है। इन बस्तियों में मकान अलग अलग एक दूसरे के बीच में कृषि भूमि को छोड़कर बने होते है अतः इन्हें कृषि गृह या वास गृह भी कहा जाता है।

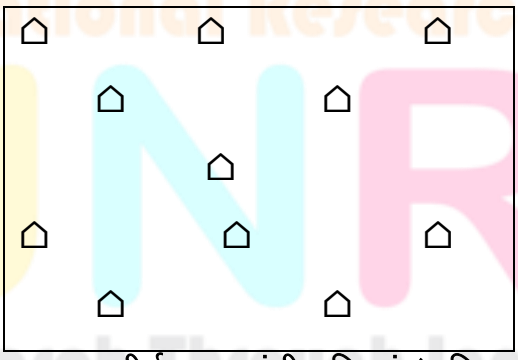

प्रकीर्ण या एकांकी बस्तियां/अधिवास

एकांकी बस्तियों में प्रत्येक घर में केवल एक परिवार ही रहता है किन्तु यह संभव है कि उस परिवार को कोई नौकर या श्रमिक उसी मकान के निजी भाग में अथवा पृथक से एक कमरा बनाकर रह सकता है। यद्यपि इस प्रकार की बस्तियों में गांव के मनुष्यों का सामाजिक संगठन कमजोर हो जाता है फिर भी इन अधिवासों से अनेक आर्थिक लाभ होते हैं तथा परिवार गांव की राजनैतिक एवं लड़ाई झगड़ों से दूर रहता है।

2. **सघन या एकत्रित बस्तियां/अधिवासः–** जिन अधिवासों में बस्ती के घर पास पास परस्पर सटे हुए होते है उन्हें सघन या एकत्रित बस्तियां कहा जाता है। इस प्रकार के अधिवास को पुन्जित या संकेन्द्रीय अधिवास भी कहा जाता है। इन अधिवासों का स्वरूप, आकार तथा कार्य प्रकीर्ण अधिवासों से भिन्न होते है जिसका प्रमुख कारण सामाजिक संबंधों का अति जटिल होना है। प्रायः इन अधिवासों मे मार्गों (सड़कों एवं गलियां) के निर्धारण पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिनमें पेय जलापूर्ति, भूमि की उर्वरा शक्ति, औद्योगिक, धार्मिक, स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार, राजनीति, तथा आवागमन आदि प्रमुख है।

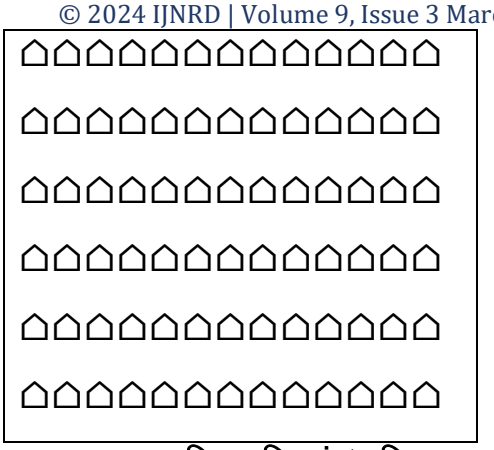

सघन या एकत्रित बस्तियां/अधिवास

3. **संयुक्त बस्तियां/अधिवासः–** संयुक्त बस्तियों के अन्तर्गत एक केन्द्रीय ग्राम होता है किन्तु इसके साथ ही गांव की सीमा के भीतर ही कुछ छोट छोटे पूरवे या नगले बसे होते है। वस्तुतः यह पूरवे विभिन्न कारणवश केन्द्रीय ग्राम को छोड़कर आये हुये एक या कई परिवारों का एक अपेक्षाकृत छोटा समूह होता है जिसमें प्रायः एक जाति–बिरादरी के लोग रहते है। उतर भारत में ऐसे अनेक ग्राम मिलते हैं जिनमे केन्द्रीय ग्राम के अतिरिक्त कई पूरवे सम्मिलित होते है। प्रोफेसर रामलोचन सिंह ने इस प्रकार की बस्तियों को अर्द्ध सघन कहते हैं।

संयुक्त बस्तियां/अधिवास

4. **अपखण्डित बस्तियां/अधिवासः–** जिन ग्रामीण अधिवास में गांव की सीमा के भीतर ही बसाव बिखरा हुआ मिलता है अर्थात् गांव के घर एक दूसरे से थोड़ी दूर पर बने होते है अथवा छोटे छोटे पूरवे या नगले थोड़ी थोड़ी दूरी पर बसे होते है तथा जिनमें कोई भी केन्द्रीय ग्राम नहीं होता इसे अपखण्डित बसाव कहा जाता है। इस प्रकार के अधिवासों को एकांकी अधिवास नहीं कहा जा सकता क्योंकि अमेरिकन या यूरोपीय फार्मगृह के समान विपरीत इन छोटी छोटी बस्तियों में एक ही परिवार का होना आवश्यक नहीं है। दूसरे इनमें सामाजिक संगठन, श्रम विभाजन, सामुदायिकता की भावना, पायी जाती है।

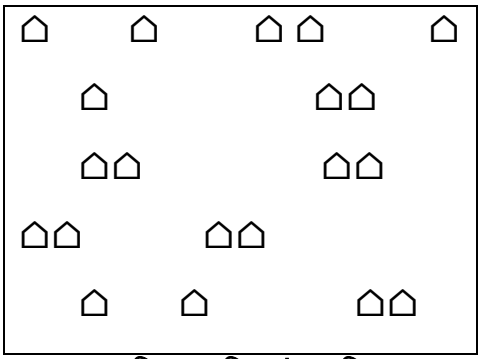

अपखण्डित बस्तियां/अधिवास

विश्व में ग्रामीण अधिवासों का वितरणः– विश्व में ग्रामीण अधिवासों का वितरण मुख्यतः तीन प्रकार में किया गया हैः–

1. एशिया प्रायद्वीप में ग्रामीण अधिवास
2. उतरी अमेरिका में ग्रामीण अधिवास
3. यूरोप में ग्रामीण अधिवास

1. **एशिया प्रायद्वीप में ग्रामीण अधिवासः–** एशियां में विशेषतः दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में ग्रामीण बस्तियां अधिक महत्वपूर्ण हैं। इनमें अधिकतर घनी बस्तियां पायी जाती है। जीवन और सम्पति की सुरक्षा से बिखरे हुए गांव इन भागों में कम ही मिलते हैं। चीन, जापान, भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार, आदि देशों में 60–85 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है जिनका मुख्य व्यवसाय खेती करना है। चीन में 75–80 प्रतिशत जनसंख्या 70000 से कम जनसंख्या वाली बस्तियों में निवास करती है तथा भारत में 60–70 प्रतिशत जनसंख्या 50000 से कम जनसंख्या वाली बस्तियों मे निवास करती है।
2. **उतरी अमेरिका में ग्रामीण अधिवासः–** संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में अधिकांश किसान कृषि गृहों में रहते है। कहीं कहीं खेतो के बीच में अथवा राजमार्गों के चौराहों के निकट सामूहिक बस्तियां भी पायी जाती है। किन्तु ये सामान्यतः छोटी छोटी होती है। ये बस्तियां आदान–प्रदान, वितरण, और ग्रामीण श्रमिको के केन्द्र होते है। इन कृषि गृहों में कृषि के यंत्रों, बीज, खाद, पशुओ का चारा, अन्य सामान और अनाज रखने के लिए उपयुक्त व्यवस्था होती है।
3. **यूरोप में ग्रामीण अधिवासः–** इस महाद्वीप में अत्यंत जटिल प्रकार के अधिवास है। जिनमें खुले हुए एकांकी कृषि गृहो से लगाकर सुविकसित बड़े गांव स्थित है। उतर के अत्यंत कठोर वातावरण में ग्रामीण अधिवास छोटे और बिखरे हुए तथा दक्षिण में काली मिट्टी के क्षेत्रों में ये बड़े और सघन मिलते है।

   प्रोफेसर ब्लॉश के अनुसारः– भारत ग्रामीण अधिवास का उतम उदाहरण प्रस्तुत करता है। अधिकतर गांव उतरी भारत में गंगा के बड़े मैदान और दक्षिण में नदियों की घाटियों तथा डेल्टाई प्रदेशों मे मिलते है। बड़े गांव का आधिक्य उतर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडू में जहां कृषि का विकास अन्य राज्यों की अपेक्षा अच्छा हुआ है। छोटे गांव मुख्यतः राजस्थान, असम, मध्यप्रदेश, छतीसगढ़ और उड़ीसा में पाये जाते है जहां जलप्रवाह प्रतिकूल अथवा शुष्कता की अधिकता है या भूमि उंची निची है या मरूस्थल का विस्तार है। वर्तमान भारत में लगभग 60–70 प्रतिशत अधिवास गांवों में पाये जाते है।

निष्कर्षः– ग्रामीण अधिवास से यह निष्कर्ष निकलता है कि जहां पर भौगोलिक दशाऐं, जलवायु, मिट्टी की उर्वरता, जलापूर्ति, समतल भूमि, आर्थिक संसाधन, वनोपज, कृषि हेतु उचित वातावरण इत्यादि होने के कारण ग्रामीण बस्तियों या अधिवासों का विकास होता है। प्राचीन काल में अधिवासों का निर्माण नदी घाटियों के किनारो तथा पानी की उपलब्धता के आधार पर होता था। वर्तमान परिदृश्य में देखे तो सम्पूर्ण विश्व की अधिकांश जनसमूह कृषि या प्राथमिक व्यवसाय में कार्यरत है जो कि ग्रामीण आवास/अधिवास का प्रतिनिधित्व करते है। ग्रामीण अधिवास को उनके जनसांख्यिकी समूह तथा भौगोलिक परिस्थिति के आधार पर सघन, एकांकी, अर्द्ध सघन, संयुक्त तथा अपखण्डित अधिवासों में विभक्त किया गया हैं। जबकि जनसमूह के प्रवास के आधार पर स्थायी एवं अस्थायी अधिवासों में विभक्त थे। ग्रामीण अधिवासों के निर्माण में कोई विशेष सामग्री का प्रयोग न होने के कारण इसका निर्माण सरल एवं सुगम है। ग्रामीण अधिवास लोगों में सामाजिक सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. एस.डी. मोर्या– अधिवास भूगोल (2022) सारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण वर्मा– अधिवास भूगोल (2005) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी, जयपुर
3. आर.वाई. सिंह– अधिवास भूगोल (2002) रावत पब्लिकेशन
4. डॉ. रामकुमार गुर्जर एवं डॉ. बी.सी. जाट मानव एवं आर्थिक भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
5. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, मानव अधिवास
6. Wikkipedia .
7. IGNOU, New Delhi, Settelment Geography.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation